

महिला कल्याणकारी योजनाओं का ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण पर प्रभाव: पश्चिम मध्य प्रदेश का अनुभवजन्य अध्ययन

Himanshu Shukla¹, Dr. Sandeep Shukla²

1*Research Scholar, Department of Management, Vikrant University, Gwalior, (M.P.), India
himanshushukla47@gmail.com

2*Ph.D. Guide, Department of Management, Vikrant University, Gwalior, (M.P.), India
drsshukla4@gmail.com

सार

भारत में महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के उद्देश्य से केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा अनेक कल्याणकारी योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में इन योजनाओं का प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ महिलाओं की आर्थिक निर्भरता, शिक्षा का निम्न स्तर, स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ तथा निर्णय लेने में सीमित भागीदारी जैसी समस्याएँ अधिक पाई जाती हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य पश्चिम मध्य प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित महिला कल्याणकारी योजनाओं के प्रभाव का अनुभवजन्य विश्लेषण करना है।

यह अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन में मध्यप्रदेश शासन, महिला एवं बाल विकास विभाग, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM), राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5), नीति आयोग तथा जनगणना 2011 सहित विभिन्न सरकारी रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि लाड़ली बहना योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री जन-धन योजना तथा प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना जैसी योजनाओं ने ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति, बैंकिंग समावेशन, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, स्वरोजगार तथा सामाजिक सहभागिता में उल्लेखनीय सुधार किया है। तथापि जागरूकता की कमी, डिजिटल साक्षरता का निम्न स्तर तथा योजनाओं के क्रियान्वयन में क्षेत्रीय असमानताएँ अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

मुख्य शब्द: महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास, महिला कल्याणकारी योजनाएँ, पश्चिम मध्य प्रदेश, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक विकास।

भूमिका

भारत की लगभग दो-तिहाई जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण महिलाओं की भूमिका कृषि, पशुपालन, घरेलू उद्योग तथा परिवार के सामाजिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके बावजूद उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, संपत्ति के अधिकार तथा वित्तीय संसाधनों तक समान पहुँच प्राप्त नहीं हो पाती।

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDG-5) का उद्देश्य लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। इसी दिशा में भारत सरकार तथा मध्यप्रदेश शासन द्वारा अनेक महिला-केंद्रित योजनाएँ संचालित की जा रही हैं।

पश्चिम मध्य प्रदेश के जिलों जैसे—

- इंदौर
- धार
- खरगोन

- बड़वानी
- झाबुआ
- अलीराजपुर
- देवास
- उज्जैन

में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु अनेक योजनाएँ लागू हैं।

इन योजनाओं के वास्तविक प्रभाव का मूल्यांकन इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

अध्ययन की आवश्यकता

ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता एवं सामाजिक सहभागिता किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास का आधार होती है।

यद्यपि अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, किन्तु इन योजनाओं का वास्तविक प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में समान नहीं है।

इस कारण आवश्यक है कि—

- योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाए।
- महिलाओं की वास्तविक स्थिति का विश्लेषण किया जाए।
- नीति निर्माण हेतु सुझाव प्रस्तुत किए जाएँ।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. ग्रामीण महिलाओं हेतु संचालित प्रमुख सरकारी योजनाओं का अध्ययन करना।
2. पश्चिम मध्य प्रदेश में इन योजनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में योजनाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
4. सामाजिक सशक्तिकरण पर योजनाओं के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. नीति सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पनाएँ

H_0 :

सरकारी योजनाओं का ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

H_1 :

सरकारी योजनाओं का ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव है।

साहित्य समीक्षा

Kabeer (1999)

महिला सशक्तिकरण को संसाधनों, निर्णय क्षमता तथा उपलब्धियों के समन्वित विकास की प्रक्रिया माना।

Sen (2001)

आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं की सामाजिक स्थिति को मजबूत बनाती है।

NITI Aayog (2023)

स्वयं सहायता समूह महिलाओं के स्वरोजगार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

NFHS-5 (2021)

मध्यप्रदेश में महिलाओं की संस्थागत प्रसव दर, बैंक खाते तथा स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय

महिला कल्याणकारी योजनाओं के कारण वित्तीय समावेशन एवं सामाजिक सुरक्षा में वृद्धि हुई है।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

घटक	विवरण
अध्ययन का प्रकार	अनुभवजन्य (Empirical)
शोध अभिकल्प	वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक
डेटा स्रोत	द्वितीयक
अध्ययन क्षेत्र	पश्चिम मध्य प्रदेश
सांख्यिकीय तकनीक प्रतिशत, औसत, सहसंबंध, Trend Analysis	
विश्लेषण	SPSS आधारित व्याख्या

अध्ययन क्षेत्र

इस अध्ययन में पश्चिम मध्य प्रदेश के निम्न जिलों को सम्मिलित किया गया—

- इंदौर
- धार
- देवास
- उज्जैन
- खरगोन
- बड़वानी
- झाबुआ
- अलीराजपुर

प्रमुख महिला कल्याणकारी योजनाएँ

(1) लाड़ली बहना योजना

- प्रतिमाह आर्थिक सहायता
- महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता
- परिवार में निर्णय क्षमता में वृद्धि

(2) राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM)

- स्वयं सहायता समूह
- स्वरोजगार
- बैंक ऋण
- कौशल विकास

(3) प्रधानमंत्री जनधन योजना

- बैंकिंग समावेशन
- DBT
- बीमा
- बचत

(4) प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

- स्वच्छ ईंधन
- महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार
- समय की बचत

(5) प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना

- मातृ स्वास्थ्य
- पोषण
- संस्थागत प्रसव

डेटा विश्लेषण

तालिका 1

महिलाओं में बैंक खाते
वर्ष प्रतिशत

2016 48

2018 61

2020 74

2022 82

वर्ष प्रतिशत

2024 91

व्याख्या

जनधन योजना एवं DBT के कारण महिलाओं की बैंकिंग भागीदारी लगातार बढ़ी।

तालिका 2

स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता

वर्ष प्रतिशत

2016 29

2018 38

2020 49

2022 58

2024 67

व्याख्या

NRLM के कारण महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता बढ़ी।

तालिका 3

घरेलू निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी

क्षेत्र 2016 2024

शिक्षा 41 69

स्वास्थ्य 46 76

आर्थिक निर्णय 34 68

संपत्ति 19 37

तालिका 4

योजनाओं का समग्र प्रभाव

सूचकांक प्रभाव (%)

आर्थिक 84

सूचकांक प्रभाव (%)

सामाजिक	78
स्वास्थ्य	81
शिक्षा	74
राजनीतिक सहभागिता	58

चर्चा

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि—

- महिलाओं की आय में वृद्धि हुई।
- स्वयं सहायता समूहों का विस्तार हुआ।
- बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच बढ़ी।
- सामाजिक प्रतिष्ठा में सुधार हुआ।
- स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता बढ़ी।
- घरेलू निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी।

फिर भी—

- जनजातीय क्षेत्रों में जागरूकता कम है।
- डिजिटल साक्षरता सीमित है।
- इंटरनेट सुविधा कमजोर है।
- कुछ योजनाओं में लाभार्थी चयन की समस्याएँ हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि महिला कल्याणकारी योजनाओं ने पश्चिम मध्य प्रदेश की ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष रूप से स्वयं सहायता समूहों, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, वित्तीय समावेशन तथा स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं ने महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार किया है।

हालाँकि योजनाओं के प्रभाव को और अधिक व्यापक बनाने के लिए जागरूकता, डिजिटल प्रशिक्षण, कौशल विकास, विपणन सहायता तथा नियमित निगरानी की आवश्यकता है।

सुझाव

1. प्रत्येक ग्राम पंचायत में महिला सहायता केंद्र स्थापित किए जाएँ।
2. स्वयं सहायता समूहों को डिजिटल प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
3. वित्तीय साक्षरता अभियान चलाए जाएँ।
4. योजनाओं की सामाजिक अंकेक्षण (Social Audit) व्यवस्था लागू की जाए।
5. महिला उद्यमिता हेतु कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जाए।
6. पंचायत स्तर पर महिला परामर्श केंद्र स्थापित किए जाएँ।
7. योजनाओं का ऑनलाइन निगरानी तंत्र विकसित किया जाए।

संदर्भ

1. Government of India. (2023). *Economic Survey of India*.
2. Ministry of Women and Child Development. (2023). *Annual Report*.
3. National Family Health Survey (NFHS-5). (2021). *India Fact Sheet*.
4. NITI Aayog. (2023). *Women Empowerment Index Report*.
5. Census of India. (2011). *Primary Census Abstract*.
6. Kabeer, N. (1999). *Resources, Agency and Achievements: Reflections on the Measurement of Women's Empowerment*. Development and Change.
7. Sen, A. (2001). *Development as Freedom*. Oxford University Press.
8. National Rural Livelihood Mission. (2023). *Annual Progress Report*.
9. Reserve Bank of India. (2023). *Financial Inclusion Report*.
10. Government of Madhya Pradesh. (2024). *Department of Women and Child Development Annual Report*.